नीलगिरी जैवविविधता में बाघों की मृत्यु चिंताजनक

प्रिलिम्स के लिये:

बायोस्फीयर रिज़र्व, नीलगिरि बायोस्फीयर रिज़र्व, बाघ

मेन्स के लिये:

बाघ संरक्षण का महत्त्व, संबंधित पहलें

स्रोत: द हिंदू

चर्चा में क्यों?

तमिलनाडु का नीलगिरी ज़िला जैवविविधता से समृद्ध है और यहाँ बड़ी संख्या में **बाघ** पाए जाते हैं। हालाँकि पिछले दो महीनों में इस ज़िले में विभिन्न कारणों से 10 बाघों की मौत हो चुकी है।

- बाघों की मृत्यु के परिणामस्वरूप उनके संरक्षण एवं अस्तित्व को लेकर संरक्षणवादी और प्राधिकार चिंतित हैं।

नीलगिरी में बाघों की मृत्यु का कारण:

- **बाघों का उच्च घनत्त्व:**
  - **नीलगिरि बायोस्फीयर रिज़र्व** के **मुदुमलाई-बांदीपुर-नागरहोल परिसर** में बाघों की संख्या व घनत्त्व अधिक होने के कारण काफी सारे बाघ **मुकुर्थी राष्ट्रीय उद्यान**, नीलगिरि तथा **गुडलूर वन प्रभागों के** आसपास के आवासों की ओर प्रस्थान कर रहे हैं, जिसके परिणामतः मानव-वन्यजीव संघर्ष के मामले में भी वृद्धि देखी गई है।
  - बाघों की संख्या में वृद्धि से स्पॉटेड डियर और इंडियन गौर जैसी शिकारी प्रजातियों पर प्रभाव पड़ता है।
    - प्राकृतिक शिकार की कमी के कारण बाघ, **पशुओं को निशाना बना सकते** हैं, जिससे **संघर्ष बढ़ सकता** है और **परिणामस्वरूप अधिक मौतें** हो सकती हैं।
- **भुखमरी और संक्रमण:**
  - मुदुमलाई टाइगर रिज़र्व के बफर ज़ोन में बाघ के शावक मृत पाए गए, जिनकी उम्र दो सप्ताह बताई जा रही है।
    - पोस्टमॉर्टम में **भुखमरी या नाभि संक्रमण** जैसे संभावित कारणों की आशंका जताई गई है।

बाघों की संख्या के खतरों को लेकर संरक्षणवादियों की चिंताएँ:

- **अवैध शिकार का खतरा: नीलगिरी ज़िले में हाल ही में हुई शिकार की घटनाएँ बाघों के लिये लगातार खतरे को रेखांकित करती हैं।**
  - आखेटक, बाघों को उनके मूल्यवान शारीरिक अंगों, जैसे **खाल, हड्डियों और अन्य अंगों** के लिये निशाना बनाते हैं, जिससे आबादी के लिये गंभीर खतरा उत्पन्न होता है।
- **ट्रैकिंग और सुरक्षा का अभाव: बाघों की आबादी को प्रभावी ढंग से ट्रैक करने और उनकी सुरक्षा करने में प्रत्यक्ष चुनौतियाँ इसकी चिंताओं का कारण हैं।**
  - इन प्रभावशाली जानवरों की निगरानी और सुरक्षा करने में असमर्थता संरक्षणवादियों की चिंताओं में से एक है।
- **शिकार प्रबंधन का अभाव:** संरक्षित क्षेत्रों में अपर्याप्त शिकार जनसंख्या प्रबंधन से असंतुलन उत्पन्न हो सकता है।
  - बाघों के लिये पर्याप्त शिकार सुनिश्चित करना उनके अस्तित्व के लिये आवश्यक है।
- **पर्यावास का क्षरण:** क्षरित आवास सीमित संसाधन प्रदान करते हैं, जिससे बाघों को भोजन की तलाश में भटकने के लिये मजबूर होना पड़ता है।
  - मानवीय गतिविधियों, वनों की कटाई और अतिक्रमण से बाघों के निवास स्थान को क्षति पहुँचती है।

बाघ

रॉयल बंगाल टाइगर (Panthera Tigris) भारत का राष्ट्रीय पशु है।

बाघ की उप प्रजातियाँ

* महाद्वीपीय (पैंथेरा टाइग्रिस टाइग्रिस)
* सुंडा (पैंथेरा टाइग्रिस सोंडाइका)

प्राकृतिक अधिवास

उष्णकटिबंधीय वर्षावन, सदाबहार वन, समशीतोष्ण वन, मैंग्रोव दलदल, घास के मैदान और सवाना

देश जहाँ बाघ पाए जाते हैं

- 13 बाघ रेंज देश जहाँ यह प्राक्रतिक रूप से पाए जाते हैं उनमें- भारत, नेपाल, भूटान, बांग्लादेश, म्याँमार, रूस, चीन, थाईलैंड, मलेशिया, इंडोनेशिया, कंबोडिया, लाओस और वियतनाम शामिल हैं।
- IUCN की नवीनतम रिपोर्ट के अनुसार, कंबोडिया, लाओस और वियतनाम में बाघ विलुप्त हो गए हैं।

संरक्षण की स्थिति

- IUCN रेड लिस्ट: लुप्तप्राय
- CITES : परिशिष्ट-I
- WPA 1972 : अनुसूची-I

खतरे

- आवास विखंडन
- अवैध शिकार
- मानव-वन्यजीव संघर्ष

संरक्षण संबंधी प्रयास

- इंटरनेशनल बिग कैट्स एलायंस (IBCA): बाघ, शेर, तेंदुआ, हिम तेंदुआ, चीता, जैगुआर और प्यूमा नामक सात बड़ी बिल्लियों के संरक्षण के लिये (भारत द्वारा शुरू)
- Tx2 अभियान: WWF द्वारा आरंभ किया गया; 2022 तक बाघों की आबादी को दोगुना करने के लक्ष्य को इंगित करते हुए 'टाइगर टाइम्स 2' को संदर्भित करता था
- राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण (NTCA): WPA, 1972 के तहत गठित
- प्रोजेक्ट टाइगर : 1973 में लॉन्च किया गया
- बाघों की गणना : प्रत्येक 5 वर्ष में

भारत में बाघ

- भारत में इनकी संख्या सबसे अधिक है
  - वर्ष 2022 तक, भारत में बाघों की संख्या 3167 थी
  - मध्य भारतीय उच्च भूमि और पूर्वी घाट में इनकी सबसे बड़ी आबादी पाई गई है
- टाइगर रिजर्व: भारत में अब 53 टाइगर रिज़र्व हैं
  - नवीनतम टाइगर रिज़र्व उत्तर प्रदेश का रानीपुर है
  - नागार्जुन सागर (आंध्र प्रदेश) सबसे बड़ा टाइगर रिज़र्व है जबकि ओरंग (असम) सबसे छोटा (कोर क्षेत्र) है।

Drishti IAS

//

नीलगिरि बायोस्फीयर रिज़र्व:

- **परिचय:**
  - नीलगिरि शब्द, **जिसका अर्थ "नीले पहाड़" है,** तमिलनाडु में नीलगिरि पठार में नीले फूलों से अच्छादित पहाड़ों (नीलकुरिंजी फूल) से लिया गया है।
    - यह रिज़र्व तीन भारतीय राज्यों में फैला हुआ है: **तमिलनाडु, कर्नाटक और केरल।**
  - यह **यूनेस्को के मानव और जीवमंडल कार्यक्रम** के तहत भारत का पहला बायोस्फीयर रिज़र्व है, जो वर्ष 1986 में स्थापित किया गया था।
  - यह **आदियान, अरनादान, कादर, कुरिचियिन, कुरुमन और कुरुम्बा जैसे कई आदिवासी** समूहों का निवास स्थल है।
  - यह विश्व के **अफ्रीकी-उष्णकटिबंधीय और इंडो-मलायन जैविक क्षेत्रों के संगम** को चित्रित करता है।
- **जीव-जंतु:**
  - **यहाँ नीलगिरि तहर, नीलगिरि लंगूर, स्लेंडर लोरिस, काला हिरण, बाघ, गौर, भारतीय हाथी और नेवला** जैसे जीव **पाए जाते हैं।**
  - मीठे जल की मछलियाँ जैसे **नीलगिरि डेनियो (*Devario neilgherriensis*), नीलगिरि बार्ब (*Hypselobarbus dubuis*) और बोवेनी बार्ब (*Puntius bovanicus*)** इस बायोस्फीयर रिज़र्व के लिये स्थानिक हैं।
- **NBR में संरक्षित क्षेत्र:**
  - **मुदुमलाई वन्यजीव अभयारण्य, वायनाड वन्यजीव अभयारण्य, बांदीपुर राष्ट्रीय उद्यान, नागरहोल राष्ट्रीय उद्यान, मुकुर्थी राष्ट्रीय उद्यान और साइलेंट वैली** इस रिज़र्व के अंदर मौजूद संरक्षित क्षेत्र हैं।

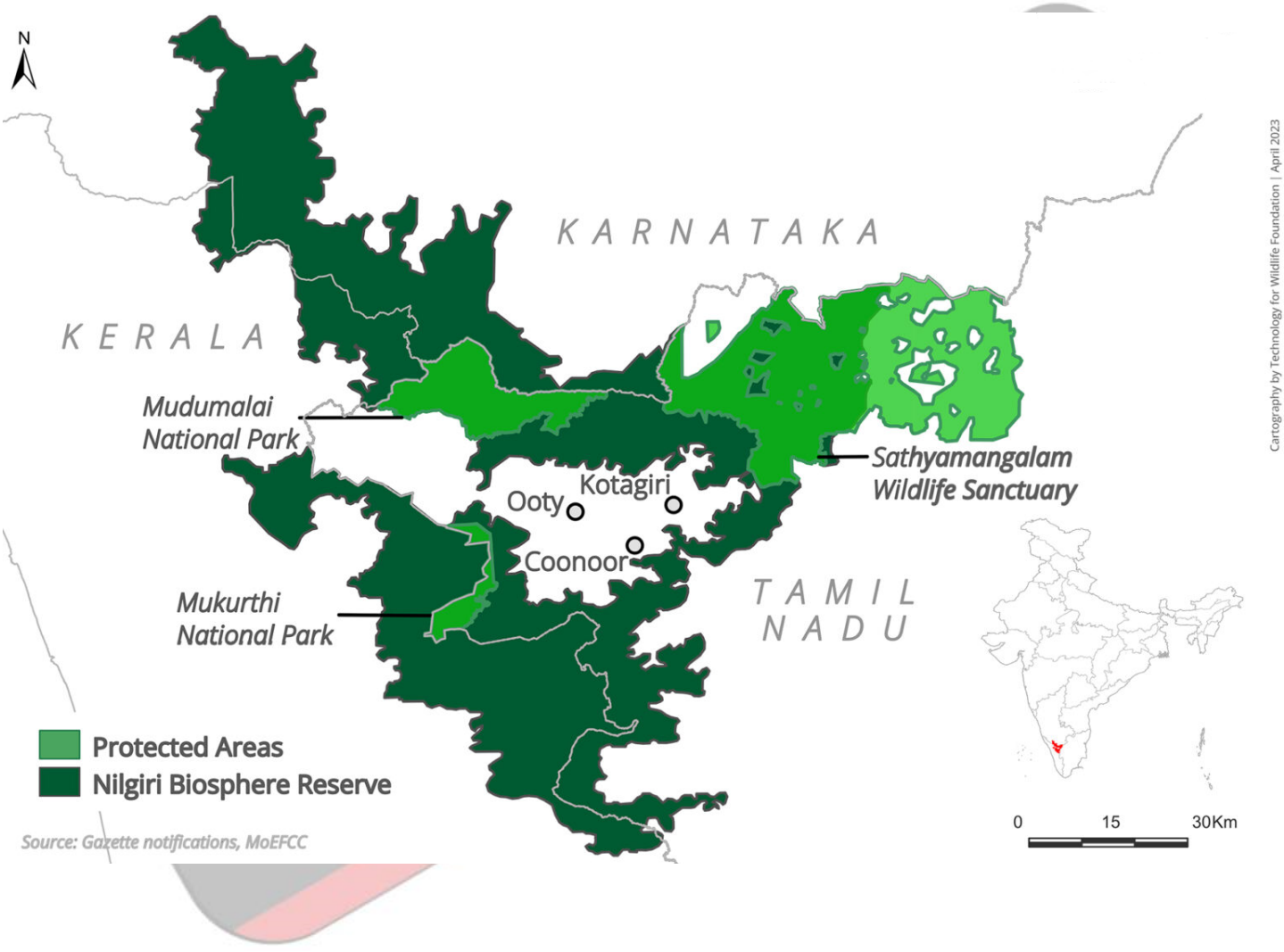

UPSC सिविल सेवा परीक्षा, विगत वर्ष के प्रश्न

??????????:

प्रश्न. निम्नलिखित बाघ आरक्षित क्षेत्रों में "क्रांतिक बाघ आवास (Critical Tiger Habitat)" के अंतर्गत सबसे बड़ा क्षेत्र किसके पास है? (2020)

(a) कॉर्बेट
(b) रणथंभौर

(c) नागार्जुनसागर-श्रीसैलम
(d) सुंदरवन

उत्तर: (c)

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/tiger-deaths-raise-concerns-in-nilgiris-biodiversity